अध्ययन सामग्री
बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
आरा (वी.कुं.सिं. वि०)

15.05.20

# वनो र च

इस सूत्र में वनः, र एवं च ये तीन पद हैं।
शब्दार्थ है - वन्नन्त और वन्नन्तान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग में 'ङीप्' प्रत्यय होता है। अन्त में रहने वाले 'न्' का 'र' होता है।
यहाँ 'वन्' से ङ्वनिप्, क्वनिप् तथा वनिप् प्रत्ययों का ग्रहण होता है।
प्रत्यय के ग्रहण में जिससे वह प्रत्यय विहित है उसके आदि से तदन्त का ग्रहण होता है। इस परिभाषा के अनुसार 'वन्' से वन्नान्त का ग्रहण होता है। यह वन्नन्त प्रातिपदिक का विशेषण है इसलिए 'येन विधिस्तदन्तस्य' सूत्र से वह तदन्तान्त का बोधक हो जाता है।
उदाहरण — अतिसुत्वरी, अतिधीवरी एवं शर्वरी।
बहुव्रीहिसमास में वन्नन्त एवं वन्नन्तान्त प्रातिपदिक से 'ङीप्' और ऐकादेश विकल्प से होता है।
उदाहरण — बहुधीवरी
पक्ष में 'टाप्' प्रत्यय होने पर बहुधीवा रूप भी बनता है।

रूपसिद्धि: —

अतिसुत्वरी — 'षुञ् अभिषवे' धातु से 'सुयजोर्ङ्वनिप्' से 'ङ्वनिप्' प्रत्यय अनुबन्ध लोप होने के बाद 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' से 'तुक्' प्रत्यय होकर 'सुत्वन्' शब्द बनता है। जिसका अर्थ है - सोम निचोड़ने वाला

यहाँ 'सुत्वानम् अतिक्रान्ता' इस विग्रह में 'कुगतिप्रादयः' से समास होने पर 'अतिसुत्वन्' शब्द बनता है।

स्त्रीत्व की विवक्षा में 'वनो र च' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय तथा न का रेफादेश होने पर

अति सुत्वर् ई = अतिसुत्वरी शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है

अति सुत्वरी सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा 'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्पृक्तं हल्' से स् का लोप हो जाने पर 'अतिसुत्वरी' पद बनता है।

अतिधीवरी — 'डुधाञ् धारणपोषणयोः' धातु से 'अशो मनिन् क्वनिब्वनिपश्च' से 'क्वनिप् प्रत्यय अनुबन्धलोप के बाद 'द्युमास्थागापाजहातिसां हलि' से धा के 'आ' के स्थान में 'ई' आदेश होने पर

धीवन् शब्द बनता है।

'धीवानम् अतिक्रान्ता' इस विग्रह में 'कुगतिप्रादयः' से समास होने पर 'अतिधीवन्' शब्द बनता है स्त्रीत्व विवक्षा में 'वनो र च' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय तथा 'न' का रेफादेश होने के बाद

अतिधीवर् ई — अतिधीवरी शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है

अतिघ्नीवरी सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के 'उ' की इत्संज्ञा

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' स् का लोप होने पर

अतिघ्नीवरी पद बनता है।

**शर्वरी** — 'शॄ हिंसायाम्' धातु से 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' से वनिप् प्रत्यय होने पर शर्वन् शब्द होता है। स्त्रीत्व की विवक्षा में 'वनो र च' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय तथा 'न' के स्थान में 'र्' आदेश होने पर

शर्वर् ई — शर्वरी' शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है

शर्वरी सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'सु' के 'उ' की इत्संज्ञा

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप होकर

शर्वरी पद बनता है।

**बहुघ्नीवरी** — 'बह्वः घ्नीवानः यस्याम्' इस विग्रह में 'अनेकमन्यपदार्थे' सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर 'बहुघ्नीवन्' शब्द बनता है।

स्त्रीत्व विवक्षा में 'वनो र च' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय एवं 'न' को 'र' आदेश होता है, उसका निषेध 'वनो न दृश इति वक्तव्यम्' इस वार्तिक से प्राप्त था, किन्तु 'बहुव्रीहौ वा' इस वार्तिक से 'ङीप्' और 'र' का निषेध नहीं होने से अर्थात् 'ङीप्' और रेफादेश होने पर बहुघ्नीवरी प्रयोग बनता है।

पक्ष में ङीप् एवं रेफादेश का निषेध होने की स्थिति में 'बहुघ्नीवन्' शब्द से स्त्रीलिङ्ग में 'टाप्' होने पर 'बहुघ्नीवा' प्रयोग बनता है।

पादोऽन्यतरस्याम् — 'पाद' जिसके अन्त में हो, ऐसे प्रातिपदिक से स्त्रीत्वविवक्षा होने पर 'ङीप्' प्रत्यय विकल्प से होता है। 'पाद्' शब्द समासान्त 'अ' का लोप करने से बना है।

उदाहरण — द्विपदी — द्विपाद्

रूपसिद्धिः — द्विपदी — 'द्वौ पादौ यस्याः' इस विग्रह में 'अनेकमन्यपदार्थे' से बहुव्रीहि समास होने पर 'संख्या सुपूर्वस्य' सूत्र से समासान्त 'द' के 'अ' का लोप होकर 'द्विपाद्' शब्द बनता है।

स्त्रीत्व की विवक्षा में 'पादोऽन्यतरस्याम्' से विकल्प से ङीप् होने पर

'ङ्' की इत्संज्ञा 'लशक्वतद्धिते' से

'प्' की इत्संज्ञा 'हलन्त्यम्' से

एवं 'तस्य लोपः' से लोप होने पर 'ई' शेष रहता है।

द्विपाद् ई

'यचि भम्' से पाद् की 'भ' संज्ञा होने पर 'पादः पत्' से 'पाद्' के स्थान में 'पद्' आदेश होकर

'द्विपदी' पद बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा

'हल्ङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से सु का लोप होकर 'द्विपदी' पद बनता है।

पक्ष में 'ङीप्' नहीं होने पर 'द्विपाद्' ही रहता है।